Toppersnotes
Unleash the topper in you

1st - ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

भूगोल

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

पेपर - 2 || भाग - 4

औद्योगिक, आर्थिक, परिवहन, राजनीतिक एवं प्रायोगिक भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	औद्योगिक भूगोल (अर्थ प्रकर्ति एवं विषय क्षेत्र)	1
2	उद्योगों का वर्गीकरण	6
3	औद्योगिक स्थान सिद्धांत	10
4	लॉश का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धान्त	19
5	विश्व के औधोगिक प्रदेश	30
6	संसाधनों का वर्गीकरण-1	50
7	संसाधनों का वर्गीकरण-2	56
8	मृदा संसाधन	62
9	जल संसाधन	81
10	जैविक संसाधन-प्राकृतिक वनस्पति	90
11	खनिज संसाधन	99
12	ऊर्जा संसाधन	121
13	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	137
14	विश्व के प्रमुख परिवहन मार्ग	145
15	राजनीतिक भूगोल का अर्थ, परिभाषा, विषय क्षेत्र	179
16	राजनीतिक भूगोल का विकास	187
17	सीमांत व सीमाएं	196
18	अन्तः स्थ राज्य	208
19	राजनीतिक भूगोल	209
20	स्पाइकमैन का रिमलैंड सिद्धांत	219
21	भौगोलिक मानचित्र	224
22	राष्ट्रीय मानचित्र नीति - 2005	238
23	मानचित्र प्रक्षेप	243

1 अध्याय — औद्योगिक भूगोल का (अर्थ प्रकृति एवं विषय क्षेत्र)

औद्योगिक भूगोल
(Industrial Geography)

अर्थ, प्रकृति, विषय क्षेत्र, विकास :-

 # अर्थ :- औद्योगिक भूगोल में मुख्य रूप से औद्योगिक स्थितियों, उद्योग के वर्गीकरण, वितरण विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

↳ औद्योगिक भूगोल आर्थिक भूगोल की एक शाखा है। औद्योगिक भूगोल में विनिर्माण उद्योग से सम्बंधित विभिन्न औद्योगिक पक्षो का अध्ययन किया जाता है।

 # विनिर्माण :-

↳ कच्चे माल का प्रयोग कर उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना, विनिर्माण कहलाता है।

 # परिभाषाएँ :-

↳ औद्योगिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र के आधार पर कई परिभाषाएँ दी जा सकती है।

(1) रिले :- "औद्योगिक भूगोल विनिर्माण उद्योग के वितरण का अध्ययन है।"

(2) क्लार्क :- "औद्योगिक भूगोल विनिर्माण उद्योग के अवस्थिती व उनके वितरण से सम्बंधित है।"

(3) अलेक्जेण्डर "औद्योगिक भूगोल में विश्व के महाद्वीपो में फैले उद्योग की अवस्थिती व वितरण का अध्ययन किया जाता है।"

(4) जोन्सटन "औद्योगिक भूगोल, औद्योगिक क्रियाओं के स्थानिक व्यवस्था का अध्ययन है।"

Toppersnotes Unleash the topper in you

औद्योगिक भूगोल का विषय क्षेत्र

#औद्योगिक भूगोल में विनिर्माण उद्योगो से सम्बंधित सभी भौगोलिक पक्षों का अध्ययन होता है जो निम्न है :-

↳ औद्योगिक भूगोल के संकल्पनात्मक पक्षों का अध्ययन।
↳ विनिर्माण उद्योग का विकास व वर्गीकरण
↳ विनिर्माण उद्योग की स्थिति, वितरण, उत्पादन समस्याओं का अध्ययन।
↳ औद्योगिक अवस्थितिकी को प्रभावित करने वाले कारकों (पूँजी, परिवहन, श्रम, बाजार, किराया) का अध्ययन
↳ उद्योगों का भौगोलिक विश्लेषण।
↳ औद्योगिकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन।
↳ औद्योगिक प्रबंधन एंव नियोजन का अध्ययन।
↳ औद्योगिक आपदाओं का अध्ययन
↳ उद्योग, कच्चे माल स्त्रोत व बाजार केन्द्र के बीच संबंधों का अध्ययन।

औद्योगिक भूगोल के उपागम

(1) सैद्धान्तिक उपागम :-

↳ सैद्धान्तिक उपागम में उद्योगों की स्थापना से संबंधित मूलभूत संकल्पनाओं एवं उद्योगो की अवस्थितिकी के सिद्धान्तो का अध्ययन किया जाता है।
↳ औद्योगिक भूगोल की अधिकांश विषय-वस्तु बड़े उद्योगो की स्थापना एंव उनके वितरण क्षेत्र से संबंधित है।

(2) व्यवहारिक उपागम :-

↳ व्यवहारिक उपागम में उद्योगो की स्थापना से लेकर वर्तमान

स्थिति, उद्योगों के कार्य, स्थानिक संबंधो का अध्ययन किया जाता है।

(3) ऐतिहासिक उपागम :-

↳ इसे विकासात्मक उपागम भी कहा जाता है।
↳ इसमें उद्योगों के विकास संबंधित अध्ययन किया जाता है।

(4) क्रमबद्ध उपागम :-

↳ क्रमबद्ध उपागम में उद्योगो के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान स्थितियों के बदलाव का अध्ययन किया जाता है इसमें उद्योगों के वैश्विक स्तर पर वितरण को देखा जाता है।

(5) वस्तु उपागम :-

↳ इस उपागम में उद्योगो के वस्तु विशेष कार्यो पर बल दिया जाता है। ये कार्य दो तरह के होते है :→
↳ ये कार्य माल के रूप में वस्तु विशेष पर बल।
↳ उत्पाद के रूप में वस्तु विशेष पर बल।

प्रादेशिक उपागम :-

↳ इस उपागम में किसी क्षेत्र विशेष में औद्योगिक विकास व उद्योगों के प्रकार, वितरण का अध्ययन किया जाता है।

औद्योगिक भूगोल का विकास :-

↳ औद्योगिक भूगोल की नवीन शाखा है जिसका विकास काफी देर से हुआ है।
↳ औद्योगिक भूगोल का आधुनिक विकास 1950 के बाद हुआ है द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकसित देशों की औद्योगिक ईकाइयाँ नष्ट हो गयी थी साथ ही 1950 तक ब्रिटेन के अधिकांश उपनिवेश भी स्वतन्त्र हो गये थे। इस कारण 1950 के बाद विश्व में तीव्र गति से औद्योगिक

विकास हुआ है।

↳ औद्योगिक भूगोल का विकास कई चरणों में हुआ।

(1) मात्रात्मक क्रान्ति :-

↳ 1950 से 1960 के दशक में भूगोल में मात्रात्मक क्रान्ति का उद्भव हुआ जिससे विषय को वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया गया व भूगोल में भी आकड़ो का सहारा लिया जाने लगा।

↳ मात्रात्मक क्रान्ति के फलस्वरूप औद्योगिक अवस्थितिकी सिद्धान्तों जैसे वेबर, लॉश, स्मिथ, आदि को स्वीकार किया गया साथ ही औद्योगिक संबंधी कई मॉडल व सिद्धान्त अस्तित्व में आये।

(2) व्यवहारवाद का विकल्प :-

↳ भूगोल में व्यवहारवाद का विकास 1960 में हुआ, ये मात्रात्मक क्रान्ति के बाद व्यवहारवाद आया।

↳ व्यवहारवाद के विकास के बाद मात्रात्मक क्रान्ति के दौरान अस्तित्व में आये औद्योगिक अवस्थितिकी के सिद्धान्तों का महत्व कम होने लगा।

↳ व्यवहारवाद के विकास के बाद क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों की सोच व विवेक के आधार पर आर्थिक कार्य किये जाते है जिससे हर क्षेत्र में औद्योगिक विकास की सम्भावनाएँ पनपने लगी।

Note :- एलन पेड ने औद्योगिक अवस्थितिकी का व्यवहार परख मॉडल प्रस्तुत किया।

(3) मार्क्सवादी भूगोल :-

↳ मार्क्सवादी भूगोल के विकास के बाद पूँजीवाद पर आधारित उद्योगों के विकास का विरोध होने लगा व पूँजीवाद पर आधारित अवस्थितिकी के सिद्धान्तो की आलोचना की क्योंकि

इससे औद्योगिक संकेन्द्रण को बढ़ावा मिलता है इससे ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानता उत्पन्न होती है। पूँजीवाद ने इस असमानता को दूर करने के लिए पिछड़े क्षेत्रों में भी उद्योगो की स्थापना पर बल दिया जिससे ग्रामीण लोगों को भी रोजगार मिल सके।

कल्याण परख उपागम :-

↳ कल्याण परख भूगोल का विकास 1970 में हुआ।

↳ कल्याण परख उपागम में सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण पर बल दिया जाने लगा।

↳ इस उपागम के आधार पर बताया कि उद्योगों का विकास इस तरह होना चाहिए जिससे अधिकतम व सभी मानव लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध हो जिससे सबका कल्याण हो सके।

वैश्वीकरण व बहुराष्ट्रीय निगमों का प्रसार :-

↳ प्रारम्भ में औद्योगिक भूगोल में केवल पश्चिमी विकसित अर्थव्यवस्थाओं का ही अध्ययन किया जाता था लेकिन बहुराष्ट्रीय कम्पनीयों द्वारा पिछड़े क्षेत्रों में भी उद्योगों की स्थापना हुई, जिससे औद्योगिक भूगोल की विषय में परिवर्तन आया व विस्तार होने लगा।

2 अध्याय उद्योगों का वर्गीकरण

उद्योगों का वर्गीकरण

- किसी भी देश में अनेक प्रकार के उद्योग देखे जाते हैं जिनकी कच्ची सामग्री की आवश्यकता व उत्पाद भी अलग-अलग होते हैं। इस आधार पर उद्योगों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

→ 1. प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर -

[A] कृषि आधारित उद्योग

- इन उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। जैसे :-
  - सूती वस्त्र उद्योग
  - ऊनी वस्त्र उद्योग
  - जूट वस्त्र उद्योग
  - रेशम वस्त्र उद्योग
  - रबर उद्योग
  - बीयर उद्योग
  - शराब उद्योग
  - चीनी उद्योग
  - चाय उद्योग
  - कॉफी उद्योग
  - वनस्पति तेल उद्योग

ब. पशु आधारित उद्योग -
- मांस उद्योग

[B] खनिज आधारित उद्योग

- इन उद्योगों को कच्चामाल खनिजों से प्राप्त होता है। जैसे
  - लौहा इस्पात उद्योग
  - सीमेन्ट उद्योग
  - सीसा-जस्ता उद्योग
  - एल्युमिनियम उद्योग
  - मशीन व औजार उद्योग
  - पेट्रोलियम रसायन उद्योग

Toppersnotes Unleash the topper in you

- चमड़ा उद्योग
- हाथी-दाँत उद्योग

c. रसायन आधारित उद्योग-
- उर्वरक उद्योग
- कीटनाशक उद्योग
- साबुन उद्योग
- तेल शोधन उद्योग

→2. प्रमुख भूमिका के आधार पर -

A. आधारभूत उद्योग
- वे उद्योग जो उत्पादन व कच्चे माल के लिए दूसरे उद्योगों पर निर्भर होते हैं जैसे :-
- लौह-इस्पात उद्योग
- ताँबा उद्योग
- AL उद्योग

B. उपभोक्ता उद्योग
- वे उद्योग जो वस्तु का उत्पादन सीधे उपभोक्ता के उपयोग हेतु करते हैं जैसे :-
- चीनी उद्योग
- कागज उद्योग

→3. पूँजी निवेश के आधार पर -

(i) कुटीर उद्योग
- इसमें परिवार के सदस्य ही कार्य करते हैं।
- मशीनरी का उपयोग कम होता है।
- पूँजी - 1 से 5 लाख तक

मध्यम उद्योग
- इसमें परिवार के सदस्यों के साथ मजदूरों को भी रखा जाता है।
- मशीनरी का कुछ उपयोग होता है।
- पूँजी 1 करोड़ से कम

वृहद् उद्योग
- बड़े श्रमिकों की आवश्यकता होती है।
- उच्च तकनीकी व मशीनरी का उपयोग होता है।
- पूँजी - 1 करोड़ से अधिक

Toppersnotes Unleash the topper in you

4. स्वामित्व के आधार पर –

I सार्वजनिक उद्योग –

इस उद्योग में सार्वजनिक क्षेत्र में लगे सरकारी एजेन्सीयों द्वारा प्रबन्धन तथा सरकार द्वारा संचालित उद्योग होते हैं। जैसे:- भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड
- स्टील ऑथोरेटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

II निजी क्षेत्र के उद्योग –

ऐसे उद्योगों में किसी एक समूह या किसी एक व्यक्ति का स्वामित्व होता है। जैसे:-
- TATA iron & Steel Comp.
- Bajaj Auto lit.
- Dabur industries

III संयुक्त उद्योग –

ऐसे उद्योग राज्य सरकार व निजी क्षेत्र दोनों के संयुक्त प्रयास से चलते हैं। जैसे:- Oil india lit.

IV सहकारी उद्योग –

इन उद्योगों का स्वामित्व कच्चेमाल की आपूर्ति करने वाले उत्पादकों तथा श्रमिकों दोनों का होता है। लाभ-हानि का बंटवारा भी आनुपातिक होता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5. विचलन उद्योग –

- इसे Footloose उद्योग भी कहा जाता है।
- ये उद्योग किसी कारक विशेष से बंधे नहीं होते है, इन्हें कहीं भी स्थापित किया जा सकता है।
- इन उद्योगों को King of Location भी कहा जाता है।
- यह उद्योग कौशल आधारित होते है।
- इनमें परिवहन भागत का कम महत्त्व होता है।

जैसे:- Auto Mobile उद्योग

- इंजनीयरिंग उद्योग
- इलेक्ट्रॉनिक उद्योग – घड़ी, रेडियो, T.V., Computer, Mobile etc.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 अध्याय औद्योगिक स्थान सिद्धान्त

औद्योग अवस्थान सिद्धान्त

↳ औद्योग स्थानीकरण के सिद्धान्त को प्रस्तुत करने वाले पहले विद्वान अल्फ्रेड वेवर थे।
↳ वेवर एक जर्मन अर्थशास्त्री थे।
↳ वेवर ने 1909 में जर्मन भाषा में एक पुस्तक प्रकाशित की (Uber den standort den industries) जिसमें औद्योग अवस्थिति का सिद्धान्त दिया लेकिन जर्मन भाषा में होने के कारण इस सिद्धान्त की तरफ लोगों का ध्यान नहीं गया।
↳ 1929 में इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ - Theory of Location of industries इस अनुवाद के साथ ही यह सिद्धान्त पूरे विश्व में छा गया।
↳ वेवर ने अपने सिद्धान्त में 1882-85 के बीच विल्हेम लौन्हार्ट द्वारा दिया गया न्यूनतम् लागत अवस्थिति सिद्धान्त को आधार बनाया
↳ वेवर ने अपने सिद्धान्त में उद्योग की अवस्थिति कहाँ होनी चाहिए इस बात को समझाया।
"किसी भी कारखाने की स्थापना व संचालन के लिए प्रमुख समस्या कच्चा माल व तैयार माल को वितरित करने की है"
↳ वेवर ने अपने सिद्धान्त में कच्चामाल व तैयार माल को वितरित करने
↳ वेवर ने अपने सिद्धान्त में कच्चेमाल व तैयार माल की परिवहन लागत को सर्वाधिक महत्व दिया।
↳ इस आधार पर वेवर का उद्देश्य था कि ऐसे स्थान पर उद्योग की स्थापना की जाये जहाँ न्यूनतम् लागत आती है।

सिद्धान्त की मान्यताएँ :-

↳ एकाकी व विलग प्रदेश होना चाहिए जहाँ की जलवायु, धरातल, प्राकृतिक संसाधन, तकनीकी दक्षता, जनसंख्या की जाति व संस्कृति एक समान होनी चाहिए।
↳ यह प्रदेश एक ही प्रशासन के अधीन होना चाहिए।
↳ कुछ प्राकृतिक संसाधन (वायु, जल, रेत) आदि सभी जगह उपलब्ध है। जबकि कुछ अन्य पदार्थ जैसे कोयला, लौह अयस्क

आदि निश्चित स्थानों पर ही पाये जाते है।

↳ कच्चे माल के स्त्रोत व उनकी स्थिति का पूरा ज्ञान होना चाहिए

↳ उपलब्ध श्रमिक सर्वत्र सुलभ नहीं होते बल्कि वे विशेष स्थानो पर अवस्थित होते है। प्रत्येक श्रम केन्द्र पर श्रमिको की आपूर्ति असीमित होती है।

↳ परिवहन का व्यय केवल भार व दूरी के अनुपात में ही बढ़ता है अर्थात भार व दूरी बढ़ने पर परिवहन का व्यय बढ जाता है।

↳ जनसंख्या का वितरण असमान है, अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बाजार की स्थिति है, जिसमें उत्पादों की मांग अधिक है।

#शब्दावलियां :-

(1) शुद्ध पदार्थ :-

↳ वह पदार्थ जो निर्माण प्रक्रिया में अपना भार नहीं खोता अर्थात अगर कोई 100 kg का कच्चा पदार्थ है उसके 100 kg भार का ही निर्माण होगा।

Ex० कपास

↳ शुद्ध पदार्थों पर आधारित उद्योग, कच्चेमाल स्त्रोत के पास व बाजार के पास कहीं भी स्थित हो सकते है। उनकी परिवहन लागत समान रहती है।

(2) अशुद्ध कच्चा माल :-

↳ ये ऐसे पदार्थ होते है, जिनके निर्माण में भार कम हो जाता है क्योंकि इसमें और भी अनुपयोगी पदार्थ मिले रहते है।

↳ अशुद्ध माल पर आधारित उद्योग कच्चे माल स्त्रोत के नजदीक स्थापित होते है, क्योंकि इनमें से बहुत सारा कच्चा माल बेकार होता है।

ex :- गन्ना, लौहा, ताँबा उद्योग।

(3) ↳ अशुद्ध कच्चे माल का पदार्थ सूचकांक 1 से अधिक होता है।

सर्वत्र सुलभ पदार्थ

↳ वे पदार्थ जो सभी जगह विद्यमान होते है, उनका मूल्य भी सभी जगह समान होता है।

Ex. हवा, पानी, मिट्टी

↳ ऐसे पदार्थों पर आधारित उद्योगों की न्यूनतम लागत स्थिति, वस्तु के वितरण क्षेत्र अथवा बाजार के पास होगी।

स्थानीय कृत पदार्थ :-

↳ ऐसे पदार्थ किसी स्थान विशेष पर ही मिलते है।

↳ स्थानीय पदार्थ शुद्ध व अशुद्ध दोनों प्रकार के हो सकते है।

पदार्थ सूचकांक :-

↳ पदार्थ सूचकांक, कच्चेमाल के भार व उत्पाद के भार का अनुपात है।

$$\text{पदार्थ सूचकांक} = \frac{\text{कच्चेमाल का भार}}{\text{उत्पाद का भार}}$$

↳ पदार्थ सूचकांक के आधार पर उद्योग की स्थिति का निर्धारण किया जाता है।

↳ पदार्थ का सूचकांक अगर 1 से अधिक हो तो उद्योग की अवस्थिति कच्चे माल के स्त्रोत के पास करनी चाहिए, क्योंकि 1 से अधिक सूचकांक वाले पदार्थ में अशुद्धियाँ अधिक होती है। जिस कारण उत्पाद व कच्चे पदार्थ के भार में भारी अन्तर होता है।

↳ अगर पदार्थ का सूचकांक 1 से कम है तो उद्योग की अवस्थितिकी बाजार के समीप होनी चाहिए।

↳ अगर पदार्थ का सूचकांक 1 है तो उद्योग की अवस्थिति कच्चे माल के स्त्रोत व बाजार के समीप कहीं भी की जा सकती है क्योंकि इसमें उपयोग होने वाले कच्चे माल के भार में कोई कमी नहीं आती है

NOTE :-

– लेकिन 1 पदार्थ सूचकांक वाले उद्योग, बाजार के समीप ही स्थापित होते है।

स्थानीयकरण भार सूचकांक :-

↳ किसी वस्तु की प्रति इकाई पर कच्चे माल का उपयोग व तैयार माल

माल के रूप में होने वाले परिवहन खर्च को स्थानीकरण भार कहा जाता है, यह भी दोनों के बीच का माप है।

$$\text{स्थानीय करण भार सूचकांक} = \frac{\text{कच्ची सामग्री का परिवहन}}{\text{उत्पादित वस्तु को ले जाने का परिवहन}}$$

↳ वे पदार्थ जो सर्वसुलभ होते है उनका स्थानीयकरण भार 1 होता है क्योंकि इस प्रकार के उद्योग उत्पादित वस्तु का ही परिवहन करते है।

↳ ऐसे उद्योग जो शुद्ध कच्चे माल का उपयोग करते है उनका स्थानीयकरण भार सूचकांक 2 होता है। ऐसे उद्योग कच्चेमाल के समीप व बाजार के समीप कहीं भी स्थापित किये जा सकते है।

↳ ऐसे उद्योग जो अशुद्ध कच्चे माल का उपयोग करते है उनका स्थानीकरण भार सूचकांक 3 या अधिक होता है, ऐसे उद्योग कच्चे माल के स्त्रोत के पास स्थापित किये जाते है।

श्रम लागत सूचकांक :-

↳ उत्पादित वस्तु की प्रति इकाई तैयार करने में लगने वाले श्रम लागत को श्रम लागत सूचकांक कहा जाता है।

$$\text{श्रम लागत सूचकांक} = \frac{\text{इकाई की अवस्थिति भार}}{\text{इकाई के उत्पादन की प्रति इकाई श्रम लागत}}$$

आइसोडोपेन :-

↳ समान परिवहन लागत वाले स्थानों को मिलाते हुए खींची गई रेखा आइसोडोपेन कहलाती है।

वेबर का न्यूनतम लागत सिद्धान्त :-

↳ वेबर ने लागत को न्यूनतम रखने के लिए 3 सिद्धान्तों का प्रयोग किया है -

(1) न्यूनतम परिवहन लागत।
(2) श्रम का प्रभाव।
(3) समूहकरण का प्रभाव।

(1) न्यूनतम परिवहन लागत :-

↳ यह वेबर के सिद्धान्त का मूल आधार है न्यूनतम परिवहन के अनुसार उद्योग की स्थिति का निर्धारण किया जाता है।

↳ वह बिन्दु जिसपर कच्चे माल को लाने व तैयार माल को बाजार में पहुँचाने में (परिवहन में) सबसे कम व्यय होता है।

↳ इसमें कई स्थितियों के आधार पर उद्योग की स्थिति का निर्धारण किया जाता है –

(A) यदि कच्चा माल एक हो तो :-

↳ यदि कच्चा माल सर्वसुलभ है – उद्योग की स्थापना कहीं भी हो सकती है। लेकिन मुख्यत: ये बाजार के समीप ही लगते है।

↳ यदि कच्चा माल स्थानीय है – इस स्थिति मे कच्चा माल शुद्ध है या अशुद्ध, इस स्थिति पर निर्भर करेगा।

(a) यदि कच्चा माल स्थानीय व शुद्ध है तो उद्योग कि स्थिति बाजार के समीप, कच्चेमाल के समीप या दोनों के बीच कहीं भी हो सकती है।

(b) यदि कच्चा माल स्थानीय व अशुद्ध है तो उद्योग की स्थापना कच्चे माल के समीप होगी, क्योंकि तैयार माल के भार में कमी आयेगी, क्योंकि अशुद्ध कच्चे माल का पदार्थ सूचकांक 1 से अधिक होता है।

↳ यदि कच्चा माल शुद्ध है व सर्वत्र उपलब्ध है तो उद्योग की स्थिति बाजार के समीप होगी।

• स्थिति- 2 – कच्चे माल दो हो तो :-

↳ यदि दोनों कच्चे माल सर्वसुलभ हो तो उद्योग की स्थापना बाजार केन्द्र पर होगी।

↳ यदि दोनों कच्चे माल में से एक सर्वसुलभ हो व एक स्थानीय हो तो उद्योग की स्थिति स्थानीय माल की प्रकृति (शुद्ध है या अशुद्ध) पर निर्भर करती है।

(a) यदि स्थानीय कच्चा माल शुद्ध हो तो उद्योग की स्थिति बाजार के समीप होगी।

(b) यदि स्थानीय कच्चा माल अशुद्ध हो तो उद्योग की स्थिति कच्चे माल के स्त्रोत के पास होगी।

यदि दोनों कच्चे माल स्थानीय हो तो –

(a) यदि दोनों स्थानीय पदार्थ शुद्ध है तो उद्योग की स्थापना बाजार केन्द्र पर होगी।

(b) यदि एक कच्चा माल शुद्ध व एक अशुद्ध हो तो उद्योग की स्थापना बाजार केन्द्र पर होगी।

(c) यदि दोनो स्थानीय पदार्थ अशुद्ध हो तो उद्योग की स्थापना दोनों कच्चें माल केन्द्र व बाजार के बीच बने त्रिभुज में उद्योग की स्थापना होगी जिस त्रिभुज में उद्योग की स्थापना होगी उस त्रिभुज को स्थानीकंरण त्रिभुज कहा जाता है।

- यदि दोनों अशुद्ध पदार्थो में से एक ज्यादा अशुद्ध हों तो उद्योग की स्थिति अशुद्ध कच्चे माल की तरफ खिसक जायेगी।
- यदि दोनों अशुद्ध कच्चे पदार्थ बराबर मात्रा में अशुद्ध हो तो उद्योग सम-बाहु त्रिभुज के बीच स्थित मध्य भाग में होगा।

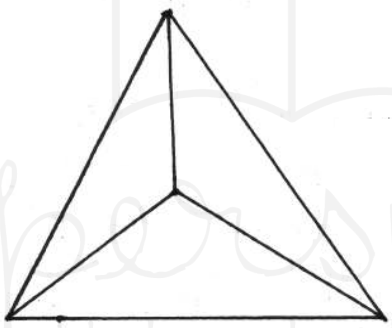

(2) परिवहन लागत का प्रभाव :-

↳ वेबर के अनुसार उद्योग की अवस्थितिकी को श्रम लागत भी प्रभावित करती है क्योंकि श्रम कुछ निश्चित स्थानों पर ही पाया जाता है एवं श्रम पर होने वाला व्यय भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होता है।

↳ श्रम लागत सूचकांक ज्ञात करने के लिए वेबर ने निम्न सूत्र का सहारा लिया –

$$\text{श्रम लागत सूचकांक} = \frac{\text{श्रम लागत}}{\text{उत्पादित वस्तु का भार}}$$

Toppersnotes
Unleash the topper in you

↳ श्रम लागत सूचकांक का अधिक मान उद्योग की अवस्थितिकी पर श्रम के अधिक प्रभाव को दर्शाती है। इस स्थिति में वेबर का मानना है कि उद्योग को सस्ते श्रमिकों वाले स्थान पर स्थानान्तरित कर देना चाहिए।

↳ यदि श्रम लागत सूचकांक का मान कम है तो ऐसी स्थिति में उद्योग अवस्थितिकी में परिवहन का बड़ा हाथ होता है।

↳ यदि किसी उद्योग की अवस्थितिकी वाले स्थान पर परिवहन लागत न्यूनतम है लेकिन श्रम लागत अधिक है तो उद्योग को न्यूनतम परिवहन लागत वाले स्थान से हटाकर कम श्रम लागत वाले स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। लेकिन यह तभी संभव है। जब कम श्रम लागत परिवहन की क्षतिपूर्ति करने में सक्षम हो, तुलनात्मक रूप से कम लागत होनी चाहिए।

↳ इस बिन्दु को हम एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं—

↳ यदि किसी उद्योग में उपयोग में आने वाला कच्चा माल 2 गुणा अशुद्ध है तथा कच्चा माल बाजार से 10 इकाई की दूरी पर उपलब्ध है इस स्थिति में उद्योग को कच्चे माल स्त्रोत के पास लगाया जाये तो परिवहन का खर्च 10 इकाई आयेगा लेकिन उद्योग को बाजार के समीप लगाया जाये तो परिवहन लागत दो गुनी हो जायेगी अर्थात परिवहन खर्च 20 इकाई होगा, इस स्थिति में प्रति इकाई दूरी पर परिवहन का खर्च दो गुना हो जायेगा, इस उद्योग को कच्चे माल के समीप स्थापित करने में परिवहन लागत न्यूनतम आयेगी।

↳ लेकिन यदि कच्चे माल के स्त्रोत पर श्रम लागत सूचकांक अधिक है तो किसी अन्य स्थान पर परिवहन लागत में वृद्धि व श्रम लागत में कमी की तुलना की जाती है अन्य स्थानों पर परिवहन खर्च कुछ कच्चे माल के रूप मे, कुछ उत्पादन के रूप में होता है एवं दोनों को मिलाकर कुल परिवहन लागत जिन स्थानों पर एक समान रहती है उन स्थानों को मिलाने वाली रेखा को समान परिवहन लागत रेखा या आइसोडोपेन कहा जाता है तथा किसी आइसोडोपेन पर बढ़े हुए परिवहन खर्च की तुलना में श्रम लागत में कमी अधिक आती है तो उद्योग को वहां पर स्थापित कर लिया जाता है।